23 गुणवत्ता बनाम परिमाण

तपस्या साहा

तीन बोर्डों की परीक्षाओं के सामाजिक अध्ययन प्रश्न पत्रों का विश्लेषण – वर्तमान में हम सामाजिक विज्ञान में किस चीज की परीक्षा ले रहे हैं? क्या यही बात इस विषय की शोचनीय स्थिति के लिए जिम्मेदार है?

बहस की शुरूआत करने के लिए आइए हम 2008–2009 के अकादमिक सत्र के सामाजिक अध्ययन के तीन बोर्डों के प्रश्न पत्रों को ध्यान से देखें। सीबीएसई, आईएससीई और कर्नाटक राज्य बोर्डों के प्रश्न पत्रों का विश्लेषण अलग–अलग संज्ञानात्मक स्तरों जैसे ज्ञान, समझ, उपयोग और कौशल पर आधारित है।

प्रश्न 2. भारत में मीठे पानी के दो स्रोत कौन से हैं?

प्रश्न 3. दो मुख्य लौह खनिजों के नाम बताएँ।

प्रश्न 4. भारत में सबसे बड़ा सौर संयंत्र कहाँ स्थित है?(सीबीएसई)

राज्य बोर्ड और सीबीएसई दोनों के प्रश्न पत्रों में कुछ बिन्दुओं को काफी साफ तौर पर दर्शाया गया है।

- भूगोल वाले भाग के केवल 30 अंक होते हैं।
- (भूगोल के) प्रश्न पत्र में 96 प्रतिशत भाग विशुद्ध रूप से याद की हुई जानकारी को स्मृति से निकालकर प्रस्तुत कर देने पर आधारित है, और उसका केवल 4 प्रतिशत भाग ही कौशल पर आधारित है।
- प्रश्न क्रमांक 45. राष्ट्रीय उद्यान क्यों बनाए जाते हैं?
- अ. जंगलों की रक्षा करने के लिए, ब. चिड़ियों की रक्षा करने के लिए, स. वन्य जीवन के संरक्षण के लिए, द. बाघों के संरक्षण के लिए (कर्नाटक बोर्ड)
- वे प्रश्न भी जो स्मृति के परे 'प्रतीत' होते हैं सम्भवतः पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ के अन्त में दिए गए अभ्यास प्रश्नों में से लिए गए हैं। अतः ऐसे प्रश्नों की इससे ज्यादा कोई माँग नहीं होती कि सीखे गए तथ्यों को पुनः दोहरा दिया जाए। यह तो एक गलत प्रश्न है, क्योंकि इसमें जो वैकल्पिक उत्तर दिए गए हैं वे सभी सही हैं।
- प्रश्न पत्र विद्यार्थियों को 'वैचारिक प्रश्नों' के उत्तर देने के लिए कोई अवसर नहीं देता। प्रश्न पत्र में पूछी गई प्रायः हर बात का रट कर सीखे हुए ज्ञान से उत्तर दिया जा सकता है।
- दोनों ही बोर्डों की निर्धारित पाठ्यपुस्तकें हैं।

आईसीएसई का प्रश्न पत्र अन्य दो बोर्डों के प्रश्न पत्रों से कई पहलुओं में भिन्न होता है

प्रश्न क्रमांक 7.

अ. खनिज तेल का सबसे बड़ा उत्पादक इनमें से कौन सा है? भारत के किन्हीं दो तेलशोधक कारखानों के नाम बताएँ.

ब. भारत के किन्हीं दो समुद्री तेल क्षेत्रों के नाम बताएँ.

स. (i) भारत के सबसे बड़े और सबसे पुराने कोयला क्षेत्र का नाम बताएँ।

(ii) कोयले से प्राप्त होने वाले किन्हीं दो कच्चे औद्योगिक पदार्थों के नाम बताएँ।

द. भारत में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के लौह अयस्कों के नाम बताएँ। सबसे अच्छी गुणवत्ता वाला लौह अयस्क कौन सा है? (आईसीएसई)

बोर्ड प्रश्न पत्रों की सीमाएँ

सभी तीनों बोर्डों के प्रश्न पत्रों में एक चीज समान है – आकलन के ये औजार किसी भी प्रकार से विषय के सार, जीवन के साथ उसके सम्बन्ध, और जीवन में उसकी जरूरत को प्रगट करने में सक्षम नहीं लगते।

इनमें से कोई भी प्रश्न किसी भौगोलिक अवधारणा को सम्बोधित नहीं करता, उदाहरण के लिए:

अ. कर्नाटक राज्य बोर्ड प्रश्न पत्र

प्रश्न क्रमांक 33. डलियों का निर्माण कुटीर उद्योग का उत्पाद है, जबकि बिजली के पंखों का निर्माण इस उद्योग का उत्पाद है :

(अ) लघु उद्योग, (ब) मझौले उद्योग,

(स) वृहत उद्योग, (द) विशिष्ट उद्योग

प्रश्न क्रमांक 44. कुटीर और लघु उद्योग भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप क्यों हैं?

(अ) रोज़गार प्रदान करते हैं, (ब) कम पूँजी की जरूरत होती है,

(स) स्वदेशी संसाधनों पर आधारित होते हैं, (द) कम विद्युत आपूर्ति की आवश्यकता होती है

प्रश्न क्रमांक 46. कौन सा संगठन कुटीर और लघु उद्योगों को कर्ज प्रदान कर रहा है?

(अ) राज्य वित्त निगम, (ब) औद्योगिक विकास बैंक,

(स) राष्ट्रीयत बैंक, (द) भारतीय स्टेट बैंक

तीनों प्रश्नों ने केवल कुछ जानकारी ही माँगी है। विद्यार्थी अनुमान लगाकर और संयोग से भी सही उत्तर प्राप्त कर सकते हैं। तो फिर इन प्रश्नों को पूछने का उद्देश्य क्या है? यहाँ पर किस चीज का परीक्षण किया जा रहा है? 'उद्योग' की अवधारणा का तो निश्चित रूप से नहीं।

ब. सीबीएसई प्रश्न पत्र

प्रश्न 2. भारत में मीठे पानी के दो स्रोत कौन से हैं?

प्रश्न 4. भारत में सबसे बड़ा सौर संयंत्र कहाँ स्थित है?

दोनों ही प्रश्नों ने 'मीठे पानी और खारे पानी' या 'सौर ऊर्जा' जैसी अवधारणाओं का तो जिक्र ही नहीं किया।

इसके बजाय केवल नाम ही पूछे गए हैं।

प्रश्न क्रमांक 16. किसी क्षेत्र में उद्योगों की स्थापना को प्रभावित करने वाले किन्हीं तीन कारकों की व्याख्या करें।

इसके बजाय यह प्रश्न इस प्रकार से हो सकता था : भारत के दिए गए नक्शे का अध्ययन करें जिसमें उसके तीन औद्योगिक क्षेत्रों मुम्बई, जमशेदपुर और विशाखापट्टनम को दर्शाया गया है। प्रत्येक क्षेत्र का कोई एक प्रमुख उद्योग है; जैसे मुम्बई में सूती कपड़ा उद्योग, जमशेदपुर में लौह और इस्पात उद्योग तथा विशाखापट्टनम में जहाज निर्माण उद्योग। आपके विचार से विभिन्न उद्योगों को हर जगह और कहीं भी क्यों स्थापित नहीं किया जा सकता?

इस प्रश्न का उत्तर देते वक्त विद्यार्थी को निश्चित तौर पर उद्योग को उसकी स्थापना की जगह से जोड़ने का अवसर मिलेगा। दिए गए प्रश्न पत्र की भाषा नीरस है, किसी भी तरह के सन्दर्भ से रहित है, कुछ हद तक उपदेशात्मक है और विद्यार्थियों के लिए सहज नहीं है।

आइए हम कुछ और उदाहरणों की जाँच करें – वे मेरे दृष्टिकोण की पुष्टि करते हैं।

उदाहरण :

अ. कर्नाटक राज्य बोर्ड प्रश्न पत्र

प्रश्न क्रमांक 69. निर्वाह कृषि, व्यावसायिक कृषि और मिश्रित कृषि क्या हैं?

प्रश्न क्रमांक 73. भारत कृषि में पिछड़ा हुआ क्यों है?

यह प्रश्न ''टैक्स्टबुक'', पेज 230, प्रश्न क्रमांक IV, 2 से लिया गया है।

ब. सीबीएसई

प्रश्न क्रमांक 21. इस तस्वीर को ध्यान से देखें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें: (21.1) तस्वीर में दिखाई गई फसल का नाम बताएँ।

(21.2) इस फसल की खेती के लिए आवश्यक जलवायु की दशाओं के बारे में लिखें।

(21.3) इस फसल का प्रमुख रूप से उत्पादन करने वाले दो राज्यों के नाम बताएँ।

इसी प्रश्न को कुछ अलग तरह से भी पूछा जा सकता था –

प्रश्न (i) इस पौधे का नाम बताएँ, जिसे हो सकता है आपने त्यौहार के दौरान बाजार में, या जूस सेंटर (रस की दुकान) पर देखा हो।

(ii) आपके विचार से इस फसल को उगाने के लिए किस प्रकार की जलवायु की आवश्यकता होगी?

(iii) कर्नाटक में यह बहुतायत से मिलती है, क्या आप भारत के किन्हीं अन्य दो राज्यों के नाम सुझा सकते हैं जहाँ यह फसल उगाई जाती हो?

- नामों आदि की जानकारी बार–बार पूछी जाती है, इसमें कोई विविधता नहीं है। यह उजागर करता है कि भूगोल को 'सामान्य ज्ञान' के जैसा अधिक माना गया है, बजाय विज्ञान की ऐसी शाखा के जिसमें अवलोकन, वर्गीकरण, गणना, मापन, परीक्षण आदि विभिन्न कौशल शामिल रहते हैं।
- प्रश्न पत्रों में ऐसे प्रश्नों का अभाव खटकता है जो रचनात्मकता, ज्ञान का उपयोग करने, और विश्लेषण करने तथा समीक्षात्मक ढंग से सोचने के कौशलों का मूल्यांकन करते हैं।
- पूछी गई जानकारी बहुत सीधी है और विद्यार्थी के लिए अपने उत्तर में नवीनता लाने की कोई गुंजाइश नहीं है।

उपरोक्त विश्लेषण से हमने क्या सीखा?

यह प्रश्न पत्र शिक्षण की एक ऐसी शैली का समर्थन करता है जो जानकारी (ज्यादातर तथ्यों और आँकड़ों) के सीधे प्रसारण तक सीमित है।

इस प्रकार का प्रश्न पत्र किसी विद्यार्थी को हतोत्साहित कर सकता है, क्योंकि यदि वह पूछी गई जानकारी/नामों से अनभिज्ञ हो तो उसके पास उत्तर देने के लिए कुछ नहीं होता। छात्रों के पास सोचने के लिए और स्वयं अपने सम्भावित उत्तर देने के लिए कोई गुंजाइश नहीं रहती। कुल मिलाकर इन मूल्यांकन उपकरणों से यह प्रभाव पैदा होता है कि इन प्रश्न पत्रों का एक ही उद्देश्य है कि कोई बच्चा कितनी सुगमता से उत्तीर्ण होने के अंक हासिल कर सकता है।

यह चुभने वाली पूछताछ कि 'क्या यह (मूल्यांकन औजार) इस विषय की मौजूदा शोचनीय स्थिति के लिए जिम्मेदार है?' ऐसे कई मुद्दों को सुझाती है जिनका सम्बन्ध स्कूल और उसके भागीदारों से है जैसे :

1. सभी भागीदारों में एनसीएफ के बारे में कोई भी ज्ञान और समझ पूरी तरह से नदारद है – इसमें स्कूल का नजरिया, शिक्षकों और अभिभावकों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली शिक्षण पद्धति भी शामिल होती है।
2. विषय के प्रति स्कूल/समुदाय/अभिभावकों/विद्यार्थियों की रुचि और रवैया निराशाजनक है।

यह विषय (भूगोल) केवल परीक्षा के लिए ही पढ़े जाने वाले प्रश्न पत्र के रूप में रहता है, जहाँ पर विद्यार्थी प्रश्न पत्र का उत्तर केवल जानकारी को याद कर लेने और फिर उसे उगल देने के द्वारा ही देते हैं। इसलिए यह ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कोई कौशल विकसित नहीं होता; कोई ऐसा ज्ञान नहीं जो व्यक्ति को बुद्धिमान बनाता हो, दिमाग की कोई रचनात्मकता जाग्रत नहीं होती, दिमाग के क्षितिज का कोई विस्तार नहीं होता, वास्तव में किसी भी प्रकार से आनन्ददायक सीखना घटित नहीं होता।

ऐसे हालातों के लिए क्या केवल प्रश्न पत्र ही एकमात्र कारण हैं, या पाठ्यपुस्तक का पूरा का पूरा स्वरूप जिसमें छपाई, तस्वीरें और विषयवस्तु शामिल हैं, तथा शिक्षण पद्धति, स्कूल, शिक्षकों, बोर्डों, अभिभावकों और सर्वसाधारण द्वारा दर्शाए गए रवैये, सभी को दोष दिया जाना चाहिए – यह एक प्रासंगिक सवाल है।

एनसीएफ का दृष्टिकोण क्या है?

''बच्चों के अनुभवों, उनकी आवाजों और सीखने की प्रक्रिया में उनके सक्रिय जुड़ाव की प्रमुखता को पहचानना।

स्कूल में सीखने के अनुभव ऐसे होना चाहिए जो ज्ञान के निर्माण का रास्ता बनाएँ, रचनात्मकता को बढ़ावा दें और आनन्द का स्रोत बनें, न कि तनाव का।

पाठ्य सामग्री के सीखने–सिखाने के लिए स्वयं करके देखने के अनुभवों और प्रोजेक्ट आधारित पद्धतियों की, तथा पर्यावरण, शान्ति उन्मुख मूल्यों, लिंग आदि से जुड़ी चिन्ताओं और मुद्दों को समझने की जरूरत होती है।

एनसीएफ में प्रस्तावित दृष्टिकोण जहाँ विशेष विषय प्रसंगों (थीम्स), जैसे पानी के सन्दर्भ में समेकित दृष्टि पर जोर देता है, वहीं वह अलग–अलग विषयों की विशिष्ट पहचान को भी स्वीकारता है।

सामाजिक विज्ञान में पाठ्य चर्चा ऐसी गतिविधियों और प्रोजेक्टों पर केन्द्रित रहती है जो विद्यार्थियों की समाज और उसकी संस्थाओं के परिवर्तन और विकास को समझने में मदद करते हैं।

परीक्षा तंत्र में विषयवस्तु–आधारित परीक्षण को बदलकर मूल्यांकन को समस्याओं के समाधान और योग्यता पर आधारित करने की आवश्यकता है।''

एनसीएफ में प्रस्तुत किया गया उद्देश्य क्या है?

- प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण के बीच सम्बन्धों को निर्धारित करने और समझने में बच्चों को प्रशिक्षित करना।
- ऐसी समझ विकसित करना जो अवलोकनों और दृष्टान्तों पर आधारित हो, और जिए गए अनुभवों तथा जीवन के भौतिक, जैविक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं से ली गई हो, न कि अमूर्त अवधारणों से।
- बच्चों की, विशेष रूप से प्राकृतिक पर्यावरण (जिसमें लोग और निर्मित वस्तुएँ शामिल रहते हैं) के सम्बन्ध में, जिज्ञासा और रचनात्मकता पोषित करना।
- पर्यावरण से सम्बन्धित मुद्दों के बारे में जागरूकता विकसित करना।

सभी भागीदारों पर इस परिकल्पना को साकार करने की महती जिम्मेदारी है। पाठ्यक्रम इस परिकल्पना के अनुरूप होना चाहिए और शिक्षण पद्धति को इसका अनुसरण करना चाहिए।

इसे लागू करने में बोर्ड, स्कूल तथा शिक्षक सभी बहुत निर्णायक भूमिका निभाते हैं। बोर्ड पाठ्यक्रम के साथ ही पाठ्यपुस्तक और अन्ततः मूल्यांकन के औजार भी निर्धारित करता है, जबकि शिक्षक

के साथ–साथ स्कूल इस पूरी परिकल्पना और उद्देश्यों को कक्षा में साकार करने का सबसे महत्वपूर्ण कार्य करता है।

एनसीएफ को सफलतापूर्वक लागू करने की धुरी 'शिक्षण पद्धति' है, लेकिन वास्तव में बोर्ड, स्कूल तथा शिक्षक सभी एनसीएफ से दूर ही हैं।

अभी स्कूल, कक्षा या बोर्ड के प्रश्न पत्र में एनसीएफ के लिए कोई जगह नहीं है। शिक्षकों के किसी भी प्रशिक्षण में कभी भी उनका इस दस्तावेज और इसकी विषयवस्तु से परिचय नहीं करवाया जाता। इसलिए शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन के औजारों का लक्ष्य केवल अंक प्राप्त करना होता है, और इस विषय को जीवन के लिए अप्रासंगिक और मृत समान मान लिया जाता है; और माता–पिता तथा सर्वसाधारण का दृष्टिकोण भी इस शोचनीय स्थिति को बढ़ावा देते हैं।

हमें जागने की और लम्बे समय से आवश्यक इस परिवर्तन को लागू करने की जरूरत है। कभी न करने से तो देर से ही करना बेहतर है।

सन्दर्भः

1. रवीन्द्रनाथ टैगोर, व्यक्तित्व, 1917: 116.17
2. एकडेमिक्स एण्ड पेडागोजी समूह, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा कर्नाटक एसएसएलसी प्रश्नपत्र का विश्लेषण, 10.9.2009
3. एनसीएफ – 2005

तपस्या साहा *ने औद्योगिक भूगोल में डॉक्टरेट किया है और वे बंगलौर और कोलकाता में भूगोल शिक्षक रही हैं। वे द टाइम्स ऑफ इंडिया के ''न्यूज़ इन एजुकेशन'' के एक खण्ड ''माइण्ड फील्ड'' से भी सम्बद्ध हैं। वे फिलहाल अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में एकडेमिक्स एण्ड पेडागोजी विशेषज्ञ के तौर पर काम कर रही हैं। उनसे इस tapasya@azimpremjifoundation.org ईमेल पर सम्पर्क किया जा सकता है।*